दैनिक सैनिक

स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी हिंदी पत्रों की परंपरा आज भी जीवित रखना जरूरी है

हिंदी पत्र व स्वाधीनता-संग्राम

१२-२-१९६४

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी

हिन्दी पत्रकारिता पर हमारे यहां कई पुस्तक प्रकाशित हो चुकी हैं और हिन्दी पत्रकारों पर भी कई शोधग्रन्थ तय्यार किये जा चुके हैं। सम्पादनकला पर भी कुछ साहित्य छपा है और अनेक पत्रकारों ने अपने संस्मरण भी लिखे हैं।

सम्पादकाचार्य अम्बिकाप्रसादजी बाजपेयी तथा श्री कमलापति त्रिपाठी की महत्वपूर्ण किताबें तो हैं ही। उनके भी पूर्व बाबू राधाकृष्ण दास तथा बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने हिन्दी पत्रों के इतिहास लिखने का प्रशंसनीय प्रयत्न किया था। पहली पुस्तिका तो छोटी सी ही थी, दूसरी कुछ विस्तृत। स्व० गुप्तजी ने एक अच्छी परम्परा का प्रारम्भ किया था, यानी कुछ उर्दू पत्रों का भी इतिहास अपनी पुस्तक में दे दिया था। इस परम्परा को कायम रखने की जरूरत है।

डाक्टर रामरतन भटनागर का शोधग्रन्थ, जो अंग्रेजी में है, निस्सन्देह महत्वपूर्ण है और बावजूद छोटीमोटी गलतियों के वह प्रामाणिक माना जा सकता है। उसके बाद डाक्टर रामगोपाल चतुर्वेदी ने भी इसी विषय पर निबन्ध लिखा था, जो अभी तक अप्रकाशित है।

हमारी प्रार्थना पर सन १९१७में सम्पादकाचार्य पं० रुद्रदत्तजी शर्मा ने हिन्दी पत्रों के इतिहास पर पुस्तक लिखना प्रारम्भ किया था और ३६ पृष्ठ लिख भी लिये थे पर अर्थाभाव के कारण वे उस ग्रन्थ को पूरा नहीं कर सके। काशी के उत्साही नवयुवक श्री गौरीशंकरजी गुप्त ने पत्रकार-बृहत्त्रयी नामक पुस्तक में कितने ही उपयोगी तथ्यों तथा संस्मरणों को इकट्ठा कर दिया है, जो अब सर्वथा दुर्लभ हैं।

बालकृष्णजी भट्ट तथा बालमुकुन्द गुप्त पर शोधग्रन्थ छप चुके हैं। एक सज्जन प्रतापनारायण मिश्र पर रिसर्च कर रहे थे। पराड़करजी के विषय में भी एक पुस्तक निकल चुकी है। गणेशजी के विषय में दो संस्मरण-ग्रन्थ छप चुके हैं और देवव्रतजी का उनका जीवन चरित्र भी प्रकाशित हो चुका है। यदि प्रताप की पुरानी फाइलें उपलब्ध हो सकतीं तो गणेशजी के विषयमें भी शोधग्रन्थ कभी का तय्यार होगया होता।

बड़े दुर्भाग्य की बात है कि ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता है पत्रों की पुरानी फाइलें नष्ट होती जाती हैं। भारतमित्र की फाइलों को एक सज्जन ने रद्दी में बेच दिया! पता नहीं कि बाजपेयी जी के स्वतंत्र अथवा नृसिंह की फाइलें कहीं मिल भी सकती हैं या नहीं। कलकत्ता समाचार तथा हिन्दू संसार के बहुत से अङ्क अवश्य सुरक्षित हैं—सो उसके उत्साही सम्पादक पं० झाबरमल्लजी शर्मा के सदुद्योग से। स्व० रामरखसिंह सहगल के भविष्य की फाइलें क्या मिल सकेंगी? बन्धुवर पद्मकान्तजी मालवीय ने अभ्युदय की अधिकांश फाइलें सुरक्षित करली हैं, यद्यपि मर्यादा की पुरानी फाइलें उनके पास भी नहीं हैं। सप्रेजी तथा लक्ष्मीधरजी बाजपेयी के हिन्दी केसरी की फाइल अब भला कहां मिलेंगी? हां, सप्रेजी पर एक ग्रन्थ जरूर छपा था।

अभी-अभी हमारी प्रार्थना पर कूर्माचल केसरी शक्ति सम्पादक पं० बदरीदत्त जी पाण्डे ने अपने संस्मरण लिपिबद्ध करा दिये हैं और वे शीघ्र ही प्रकाश में आवें। ×

× मिलने का पता: श्री शुकदेव पाण्डे, कुलपति बिड़ला एजूकेशन ट्रस्ट पिलानी (राजस्थान)

स्वाधीनता संग्राम के वे एक प्रतिष्ठित सैनिक बल्कि सेनाध्यक्ष रहे हैं और इस समय वे ८३ वर्ष के हैं।

आयुर्वेद पंचानन श्री जगन्नाथप्रसादजी इस समय हमारे सबसे वयोवृद्ध पत्रकार हैं और श्री पाण्डेजी तथा श्री बाजपेयीजी उनके अनुज हैं। जहां तक हम जानते हैं उन दोनों के बाद पं० झाबरमल्लजी शर्मा श्री माखनलालजी चतुर्वेदी और डा० हरिशङ्कर शर्मा के नाम लिये जा सकते हैं। मैं, पालीवालजी और श्रीरामजी इनसे छोटे हैं।

क्या ही अच्छा हो यदि कोई उत्साही पत्रकार घूम-घूमकर इन सभी से इंटरव्यू ले ले और उनके अनुभवों को लिपिबद्ध करले।

स्वाधीनता संग्राम के लिये किन-किन हिन्दी पत्रकारों को कैसे संकट भोगने पड़े उन सबका वृतान्त एक जगह इकट्ठा मिलना चाहिये। किन-किन की दीर्घ-तपस्या के परिणामस्वरूप हिन्दी पत्रकारिता ने उन्नति की है उनकी यशगाथा से नवीन पत्रकारों को परिचित कराना अत्यन्त आवश्यक है।

बाबू बालमुकुन्द गुप्त की पचास रुपये महीने की नौकरी इसलिये छूट गई कि उन पर गवर्नमेण्ट के खिलाफ लिखने की आशङ्का की गई थी! खुदीराम बोस के बलिदान के पक्ष में बोलने पर बालकृष्णजी भट्ट को अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा। हिन्दी प्रदीप के ढाई सौ से अधिक ग्राहक नहीं थे और बकौल पं० जनार्दन भट्ट जब सवा रुपये का वी० पी० छूटकर आता था तो उनके पिताजी घर के लिये घी लाते थे। हमारे अनुरोध से स्वर्गीय लक्ष्मीकान्त जी भट्ट ने अपने पूज्य पिताजी का जीवन चरित्र लिख दिया था। यद्यपि वह छपा नहीं।

पं० प्रतापनारायण मिश्र तथा पं० माधवप्रसाद मिश्र की ओजस्वी लेखनी ने जनजाग्रतिमें बड़ी मदद दी। पं० सुन्दरलालजी पं० कृष्णकान्तजी मालवीय की साधना तथा तपस्या आज का पत्रकार प्रायः अपरिचित ही है। कविवर घासीराम व्यास की एक विद्रोहात्मक कविता छापने के कारण श्रद्धेय कृष्णकान्तजी महर्ष जेल गये थे। अमर शहीद गणेशजी के बलिदान की विस्तृत गाथा के लिए हम पटना के स्व० देवव्रतजी

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत
National Archives of India

कालपी के हिन्दी भवन और ग्वालियर के शंभुनाथ सक्सेना के ऋणी हैं। लक्षपतियों के नगर कानपुर ने गणेशजी के साहित्यिक श्राद्ध के लिये क्या किया, उस पर कुछ न लिखना ही ठीक है। कर्मयोगी, कर्मवीर तथा भविष्य का इतिहास हमारे यहां सर्वथा उपेक्षित ही रहा है। हम लोग विश्ववाणी को भूल गये, जनवाणी को भूल गये यहां तक कि नया समाज को भी भूल गये।

कई वर्षों से हम बन्धुवर पालीवालजी से अनुरोध करते रहे हैं कि वे सैनिक के उत्तमोत्तम लेखों का संग्रह तो करा दें, पर अत्यन्त व्यस्त रहने के कारण वे इस आवश्यक कर्तव्य का पालन अब तक नहीं कर सके! एक समय था जब प्रताप की तरह सैनिक भी विदेशी सरकार की आंखों में खटकता था और उसके विरुद्ध सरकारी रिपोर्ट में कहा गया था कि वह बोलशेविज्म साम्यवाद का प्रचार करता है! बहुत सा महत्वपूर्ण मसाला तो ब्रिटिश सरकार ने चलने से पहले नष्ट कर दिया, फिर भी जो बच रहा है उसके आधार पर 'स्वाधीनता-संग्राम में भारतीय पत्रों का योग" इस विषय पर एक ग्रन्थ लिखा जा सकता है।

हिन्दी पत्रों की तपस्या के विषय में लिखते हुए तुलनात्मक अध्ययन के लिये ही सही, हमें उर्दू बंगला तथा मराठी पत्रों का भी लेखा जोखा ले लेना चाहिये। हमारे सौभाग्य से श्री शान्ति नारायण जी भटनागर (उर्दू स्वराज्य के संस्थापक) ८४ वर्ष की उम्र में अब भी विद्यमान हैं। गणेशजी ने पहले पहल उन्हीं के यहां लिखना शुरू किया था उनके पत्र के आठ सम्पादक एक के बाद एक जेल चले गये थे और कुछ को तो अण्डमान की भी हवा खानी पड़ी थी! उनके साथी महात्मा नन्दगोपालजी को काले पानी की सजा हुई थी। वे दयालबाग आगरे में रहते हैं। श्री लद्धारामजी भी मौजूद हैं और श्री अमीरचन्द बम्बवाल भी, जो इस समय भी देहरादून से फ्रंटियर मेल निकाल रहे हैं। क्या यह असम्भव है कि उन सब लेखों को, जिनके कारण इन्हें भयंकर दण्ड सहने पड़े, पुस्तकाकार में प्रकाशित कर दिया जाय? उन लेखों को हाईकोर्ट के पुराने दागजातों में तलाश कराया जा सकता है। विश्वविद्यालयों में जो इतिहास के अध्यापक हैं वे अपने विद्यार्थियों से इन विषयों पर शोध ग्रन्थ तैयार करा सकते हैं। देवतास्वरूप भाई परमानन्दजी के जामात श्री धर्मवीरजी ने लाला हरदयालजी पर एक निबन्ध लिखा भी है। मालूम नहीं कि वह छपा या नहीं। हम फिर भी कहेंगे कि जो परम्परा बाबू बालमुकुन्द जी गुप्त ने प्रारम्भ की थी—याने हिन्दी उर्दू पत्रों के इतिहास को साथ साथ लिखने की—उसे फिर से चालू करना चाहिये। सिर्फ लिपिभेद के कारण हम महत्वपूर्ण इतिहास से अपने को वंचित नहीं रख सकते।

आखिर हमारी ये साहित्यिक संस्थाएं—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी और साहित्य सम्मेलन, प्रयाग किस मर्ज की दवा है, जो इस कर्त्तव्य का पालन नहीं कर सकतीं? अगर वे कुछ न करें तो आगरे की नागरी प्रचारिणी सभा तथा इन्दौर की मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति जैसी जनपदीय संस्थाओं को ही यह काम अपने हाथ में ले लेना चाहिये।

कभी न कभी हमारे शासकों में इतनी अकल आवेगी ही कि वे अपने राज्यों में पत्रकार विद्यापीठ कायम करें। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री द्वारिकाप्रसाद जी मिश्र स्वयं एक प्रतिष्ठित पत्रकार रह चुके हैं। उन्हें भोपाल में—

गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकार विद्यालय

स्थापित करने से कौन रोकता है? अन्य हिन्दी भाषा भाषी राज्यों में हिन्दी पत्रकार प्रतिष्ठित पदों पर हैं। श्री हरिभाऊ उपाध्याय, श्री कमलापति त्रिपाठी, श्री सुधांशजी और सर्वोपरि श्री सम्पूर्णानन्दजी यदि चाहें तो प्रत्येक हिन्दी भाषी राज्य में एक पत्रकार विद्यालय स्थापित हो सकता है। स्थापना के पूर्व जगह-जगह से उपयोगी मसाले की नकल या फोटो संग्रह करने की जरूरत है। मास्को की लेनिन लाइब्रेरी में प्रावदा के पचास वर्षों के प्रत्येक अंक की फिल्म मौजूद है हैदराबाद के श्री बेकरलाल जी ओझा ने इस दिशा में अच्छा कार्य किया है और श्रद्धेय पं० झाबरमल्लजी के पास भी अच्छा संग्रह है। आचार्य द्विवेदी जी के पास भी अच्छा संग्रह है। आचार्य द्विवेदीजी का संग्रह ना० प्र० सभा काशी में है ही।

हिन्दी जगत में, दीर्घजीवी पत्रों की संख्या अधिक नहीं है। सौभाग्य से जो विद्यमान हैं उनकी जयन्तियों के अवसर से लाभ उठाकर हम अपने पूर्वज पत्रकारों का साहित्यिक श्राद्ध कर सकते हैं।

सैनिक की जयन्ती एक ऐसा ही महत्वपूर्ण अवसर है। सैनिक ने भारत मित्र और हिन्दी प्रदीप, अभ्युदय और कर्मयोगी की परम्परा को कायम रक्खा है और प्रताप का तो वह वंशज ही है। यद्यपि हमारा देश स्वाधीन हो चुका है फिर भी अभी हमें बहुत सी लड़ाइयां लड़नी हैं—अज्ञान, भुखमरी और रोगों के विरुद्ध—और उनके लिए हमारे पत्रकारों को आदर्शवादिता का सबक सीखना होगा। हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय होगा। 'स्वाधीनता-संग्राम में हिन्दी पत्रकारों का योग'।

———

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA